NORTH POINT SR. SEC. BOARDING SCHOOL

HOME WORK –I CLASS- 11

हम तौ एक एक करि जांनां, संतों देखत जग बौराना

कबीर

व्याख्या एवं अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1.

हम तौ एक करि जांनानं जांनां ।
दोइ कहैं तिनहीं कौं दोजग जिन नाहिंन पहिचांनां।
जैसे बढ़ी काष्ट ही कार्ट अगिनि न काटे कोई।
सब घटि अंतरि तूही व्यापक धरै सरूपै सोई।

एकै पवन एक ही पानीं एकै जा ेति समांनां।
एकै खाक गढ़े सब भांडै एकै का ेंहरा सांनां।
माया देखि के जगत लुभांनां कह रे नर गरबांनां
निरभै भया कछू नहि ब्यापै कहैं कबीर दिवांनां। (पृष्ठ 131)

प्रश्न

a). कबीरदास परमात्मा के विषय में क्या कहते हैं?
b). भ्रमित लोगों पर कवि की क्या टिप्पणी है?
c). संसार नश्वर है, परंतु आत्मा अमर है-स्पष्ट कीजिए।
d). कबीर ने किन उदाहरणों दवारा सिदध किया है कि जग में एक सत्ता है?

2.

सतों दखत जग बौराना।
साँच कहीं तो मारन धार्वे, झूठे जग पतियाना।
नमी देखा धरमी देखा, प्राप्त करें असनाना।
आतम मारि पखानहि पूजें, उनमें कछु नहि ज्ञाना।
बहुतक देखा पीर औलिया, पढ़े कितब कुराना।
कै मुरीद तदबीर बतार्वे, उनमें उहैं जो ज्ञाना।

आसन मारि डिभ धरि बैठे, मन में बहुत गुमाना।
पीपर पाथर पूजन लागे, तीरथ गर्व भुलाना।

टोपी पहिरे माला पहिरे, छाप तिलक अनुमाना।
साखी सब्दहि गावत भूले, आतम खबरि न जाना।
हिन्दू कहैं मोहि राम पियारा, तुर्क कहैं रहिमाना।
आपस में दोउ लरि लरि मूए, मम न काहू जाना।
घर घर मन्तर देत फिरत हैं, महिमा के अभिमाना।
गुरु के सहित सिख्य सब बूड़े, अत काल पछिताना।
कहैं कबीर सुनो हो सती, ई सब भम भुलाना।
केतिक कहीं कहा नहि माने, सहजै सहज समाना। (पृष्ठ 131-132)

प्रश्न

a). कबीर किसे संबोधित करते हैं तथा क्यों?
b). कवि संसार को पागल क्यों कहता है?
c). कवि ने हिंदुओं के किन आडंबरों पर चोट की है तथा मुसलमानों के किन पाखंडों पर व्यंग्य किया है?
d). अज्ञानी गुरुओं व शिष्यों की क्या गति होगी?

3) काव्य-सौंदर्य संबंधी प्रश्न

हम तो एक एक करि जाना।
दोइ कहैं तिनहीं कों दोजग जिन नाहिन पहिचाना।
एकै पवन एक ही पानीं एके जोति समाना।
एकै खाक गढ़े सब भाड़े एकै कांहरा सना।

जैसे बाढ़ी काष्ट ही काटे अगिनि न काटे कोई।
सब घटि अंतरि तूही व्यापक धरे सरूपैं सोई।
माया देखि के जगत लुभाना काहे रे नर गरबाना।
निरर्भ भया कछू नहि ब्याएँ कहैं कबीर दिवाना।

प्रश्न

a). भाव–सौंदर्य स्पष्ट करें।
b). शिल्प–सौदर्य बताइए।

4)

सतों दखत जग बौराना।
साँच कहौं तो मारन धावै, झूठे जग पतियाना।।
नेमी देखा धरमी देखा, प्राप्त करें असनाना।
आतम मारि पखानहि पूजे, उनमें कछु नहि ज्ञाना।।
बहुतक देखा पीर औलिया, पढ़े कितब कुराना।
कै मुरीद तदबीर बतार्वे, उनमें उहै जो ज्ञाना।।
आसन मारि डिभ धरि बैठे, मन में बहुत गुमाना।
पीपर पाथर पूजन लागे, तीरथ गर्व भुलाना।।

टोपी पहिरे माला पहिरे, छाप तिलक अनुमाना।
साखी सब्दहि गावत भूले, आतम खबरि न जाना।।
हिन्दू कहै मोहि राम पियारा, तुर्क कह रहमाना।
आपस में दोउ लरि लरि मूए, मम न काहू जाना।।
घर घर मन्तर देत फिरत हैं, महिमा के अभिमाना।
गुरु के सहित सिख्य सब बूड़, अत काल पछिताना।।
कहैं कबीर सुनी हो सती, ई सब भम भुलाना।
केतिक कहीं कहा नहि माने, सहजै सहज समाना।।

प्रश्न

a). भाव–सौंदर्य स्पष्ट करें।
b). शिल्प–सौंदर्य पर प्रकाश डालें।